शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मृदुला गर्ग के उपन्यासों का पुनरावलोकन

रीना राठौर (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा उपन्यास साहित्य है। उपन्यास बियावान जंगल के सामान है, जिसमें विभिन्न किस्म के चरित्र अपनी भीनी, मीठी-कडवी गंध लिए पाठकों के समक्ष आते हैं और आनंद तथा अवसाद से हृदय तथा मस्तिष्क को प्रभावित करते है। मृदुलागर्ग ने उपन्यास साहित्य में मानव मन की विविध परतों को अनेक प्रकार से खोला है। लगभग चालीस साल के लेखन कर्म में उन्होंने सात उपन्यास लिखे और साहित्य जगत में उन पर मुकम्मल चर्चा हुई प्रस्तुत शोध पत्र में मृदुलागर्ग के उपन्यासों का पुनरावलोकन किया गया है।

प्रस्तावना

"उपन्यास साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। यह आधुनिक युग की देन है तथा अन्तः एवं बाह्य जगत् एवं जीवन की जितनी यथार्थ एवं सुन्दर अभिव्यक्ति उपन्यास में दिखाई देती है उतनी साहित्य की अन्य किसी विधा में नहीं। सार्त्र ने कहा है उपन्यास जीवन नहीं है परन्तु जीवन का प्रतिरूप है।"[1] उपन्यास के माध्यम से लेखक अपने मन की कोई विशेष बात या विचार प्रस्तुत कर सकता है। उपन्यास में जीवन की वास्तविकताओं को काल्पनिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास में मानव के जीवन के प्रत्येक पहलू को छूने का प्रयास किया जाता है।

अर्नेस्ट ए.बेकर के अनुसार "उपन्यास सामाजिक जीवन का गद्यबद्ध कथानक है और जीवन तथा समाज की व्याख्या का सर्वोत्तम साधन है।"[2]

मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों में देश-विदेश की कथाओं को मिलाकर अपनी एक अलग छवि साहित्य जगत् में प्रस्तुत की है। इनके उपन्यासों में हमें नारी के साथ-साथ पुरूष का भी शोषण होते हुए दिखाई देता है। इनके उपन्यासों में हमें आधुनिकता की स्पष्ट छवि दिखाई पड़ती है। बिना किसी झिझक के इन्होंने जीवन के सभी पहलुओं को आधुनिक तथा यथार्थ ढंग से पाठकों के समक्ष रखा है जिसके कारण इन्हें विवादों का भी सामना करना पड़ा है।

आधुनिक महिला कथाकारों में मृदुला गर्ग एक नामचीन कथाकार के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। इन्होंने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर सफलतापूर्वक लेखनी चलाई है। मृदुला गर्ग की रचनाओं के विषय यथार्थ के धरातल को छूते हुए प्रतीत होते हैं। इन्होंने महानगरीय जीवन की विसंगतियों, पारिवारिक विघटन, मानवीय जीवन के एकाकीपन, प्रेम, स्त्री संघर्ष और सेक्स आदि विभिन्न स्थितियों का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है, जिससे इनकी कुछ कृतियों को विवादों का भी सामना करना पड़ा है।

मृदुला गर्ग ने अपनी रचनाओं में नारी जीवन की विविध समस्याओं तथा संघर्षों पर भी बड़ी

गहराई के साथ प्रकाश डाला है। मृदुला गर्ग की रचनाओं पर दृष्टि डालें तो अब तक उनके सात उपन्यास, बारह कहानी संग्रह, तीन नाटक, तीन लेख संग्रह, एक संस्मरण, एक यात्रा वृतान्त तथा एक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनके प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त वर्णन निम्नानुसार है -

उसके हिस्से की धूप

उसके हिस्से की धूप 1975 में लिखा गया मृदुला गर्ग का पहला उपन्यास था। यह लीक से हटकर लिखा गया था, क्योंकि इसमें विवाहेत्तर सम्बन्ध को दर्शाया गया है। यह एक त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र मनीषा जो कि विवाहित है तथा एक सम्मानित अध्यापिका के पद को सुशोभित किये हुए है। वह अपने पति की उदासीनता से दुःखी होकर एक-दूसरे पुरूष की ओर आकृष्ट हो जाती है। क्योंकि वह यह मानती है कि विवाह में प्रेम का होना अति आवश्यक है। वह अपने पति से तलाक लेकर दूसरे व्यक्ति से विवाह कर लेती है। इस उपन्यास में लेखिका ने आधुनिकता के नये आयाम प्रस्तुत किये गये हैं। इसमें मनीषा एक ऐसी नारी पात्र है जो प्रेम को अधिक महत्व देती है तथा इसी के विपरीत एक अन्य पात्र जो उसके साथ ही अध्यापिका पद पर है। वह प्रेम तथा रोमांस को क्षणभंगुर मानती है। इस प्रकार दो पात्रों की मानसिकता तथा अन्तर्द्वन्द्व को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है। दूसरा विवाह करने के बाद भी मनीषा ऊब महसूस करती है। जब वह स्वयं आत्मचिंतन करती है तो वह महसूस करती है कि जीवन में पूर्णता कहीं भी नहीं है और इसी पहलू को ध्यान में रखते हुए वह लेखन में अपना ध्यान लगा लेती है।

"एक सुखद अनुभूति के साथ उसने पाया कि अकेलेपन की चिलकती हुई धूप भय से उसे डरा नहीं रही प्यार से सहला रही है। वह सीधी अपने कमरे में रखी अपनी लिखाई की मेज पर जा पहुँची और वहाँ पड़ा कलम हाथ में थाम लिया। तुम मुझे लेखिका मानो न मानो मधुकर कुछ फर्क नहीं पड़ता, उसने मन ही मन कहा मैं लिखूँगी, अवश्य लिखूंगी और वह, जो मुझे परितोष दे सकें।"[3]

इस प्रकार यह उपन्यास हिन्दी साहित्य जगत में आधुनिकता के नये मानदण्ड लेकर प्रस्तुत हुआ तथा भारतीय नारी के वैवाहिक जीवन के संघर्ष को अपनी आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया है। आज लगभग 35 वर्षों बाद इस उपन्यास की पृष्ठभूमि को लेकर एक धारावाहिक का भी निर्माण हुआ है।

वंशज

'वंशज' मृदुला गर्ग द्वारा 1979 में रचा गया ऐसा उपन्यास है जो दो पीढ़ियों के बीच के संघर्ष, आपसी विचार मतभेद तथा कड़वाहट को दर्शाता है। इसमें पिता-पुत्र के विचारों में टकराव तथा अन्तर्द्वन्द्व को जीवन्तता के साथ उद्घाटित किया गया है। इस उपन्यास में लेखिका ने अपनी प्रचलित कथा शैली को छोड़कर समाजशास्त्र के विषय को अपने लेखन की शैली बनाया है। समाजशास्त्र के अध्ययन यह प्रमाणित करते हैं कि आज की युवा पीढ़ी तथा उनके माता-पिता दोनों में एक अन्तर सा उत्पन्न हो गया है। दोनों ही एक दूसरे को समझने की सामर्थ्य को खोते जा रहे हैं, जिससे रिश्तों में दूरियों की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसमें एक पिता जो कि अंग्रेजी शासन की नीतियों के पालक है तथा पूँजीवाद तथा नौकरशाही का समर्थन करने वालों में से एक है। वे चाहते हैं कि उनके पुत्र तथा पुत्री भी उन नियमों का पालन करें। लेकिन उनका पुत्र सुधीर उनकी

अंग्रेजी नौकरशाही तथा नियमों का दुश्मन है। वह पिता के खिलाफ विद्रोह करता है। इस कारण दोनों में विवाद होता रहता है। सुधीर पन्द्रह वर्ष की आयु से ही 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के आयोजन में भाग लेने लगता है। कथावस्तु में भारतीय पुत्री का अपने पिता के प्रति स्नेह तथा प्रेम दर्शाया गया है। वहीं पुत्र के विद्रोही स्वर से आहत पिता का दुःख भी व्यक्त किया गया है।

"यह उपन्यास परिवार की नींव से उठती एक ऐसी इमारत की तरह है जिसमें जज साहब की न्यायप्रज्ञा और सुधीर की न्यायिकता का अद्भुत आवास है।"[4]

पिता-पुत्र संघर्ष, पिता-पुत्री प्रेम के साथ ही कहानी में पति-पत्नी की आपसी समझदारी तो कहीं पति-पत्नी के आपसी मतभेद, लालच स्वार्थ तथा गरीबों के प्रति सहानुभूति आदि प्रवृत्तियों का यथार्थ अंकन किया गया है। इस प्रकार उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी संदर्भों पर लेखिका ने प्रकाश डाला है।

चितकोबरा

चितकोबरा मृदुला गर्ग द्वारा 1979 में लिखा गया एक विवादास्पद उपन्यास है। इसकी विषयवस्तु प्रेम तथा शारीरिक भोग के अंतर को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। प्रेम विवाह तथा सेक्स जैसे तथ्यों को माध्यम बनाकर लेखिका ने उपन्यास की विषयवस्तु का ताना-बाना रचा है। नारी की पारम्परिक नैतिकता की छवि को पीछे छोड़कर लेखिका ने नारी की आधुनिक छवि प्रस्तुत की है, जहाँ वह अपने मन की संतुष्टि के लिए नैतिकता के आदर्श को त्याग कर स्वच्छन्द हो जाती है। मृदुला गर्ग ने नारी की परम्परागत छवि को तोड़कर आधुनिक रूप में नारी की इच्छाओं तथा मन की पीड़ा को खुले रूप में प्रस्तुत करके विवादास्पद किन्तु प्रसिद्ध लेखिका के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की है। नारी तथा पुरूष के सम्बन्धों को खुले रूप में अभिव्यक्ति 'चितकोबरा' में प्राप्त हुई है। लेखिका ने पूरे साहस के साथ आलोचना के डर से मुक्त होकर भारतीय नारी का वह रूप प्रस्तुत किया है, जहाँ वह वैसे ही अपना जीवन जीना चाहती है जैसे कि पुरूष जीता है। वह चाहती है कि उसे केवल शारीरिक भोग की वस्तु न समझा जाये। उसे प्रेम तथा सहानुभूति की भी आवश्यकता है। कहानी के मुख्य पात्र मनु, रिचर्ड तथा महेश हैं। मनु तथा महेश पति-पत्नी है किन्तु मनु को वैवाहिक जीवन में प्रेम नहीं मिलता। इस कारण वह शारीरिक सम्बन्धों में मन से समर्पण नहीं कर पाती है और एक अन्य पुरूष रिचर्ड से भावनात्मक एवं शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। रिचर्ड व मनु दोनों ही विवाहित है और दोनों के दो-दो बच्चे है। फिर भी वे दोनों तरफ के कर्त्तव्य बिना किसी संकोच के निभा रहे हैं। वे दोनों वैवाहिक जीवन में खुश नहीं है, इसलिए समग्र तथा उदात्त प्रेम की तलाश में रहते हैं। 'चितकोबरा' उपन्यास का आधार प्रेम दर्शन है। लेखिका का प्रेम के सम्बन्ध में विचार दृष्टव्य हैं -

"जीवन को उसके समग्र और उदात्त रूप में जानने पहचानने के लिए प्रेम से अधिक उपयुक्त माध्यम नहीं मिल सकता, जो लोग प्रेम के कथ्य को मात्र स्त्री पुरूष सम्बन्ध तक सीमित कर लेते हैं वे साहित्य के प्रति और जीवन के प्रति भी अन्याय करते है।"[5]

अनित्य

'अनित्य' उपन्यास मृदुला गर्ग द्वारा राजनीतिक संदर्भों को लेकर 1980 में लिखा गया था। 'अनित्य' उपन्यास मन्नू भण्डारी द्वारा लिखे गये 'महाभोज' के बाद अत्यन्त प्रसिद्ध रहा है। इस

उपन्यास को लिखकर लेखिका ने यह साबित कर दिया कि वे नारी लेखन तथा पीड़ा से सम्बन्धित विषयों से परे देश और समाज के प्रति अपना हित रखकर स्वतन्त्रता आन्दोलनों के विषय के प्रति भी लोगों को जागरूक करने की क्षमता रखती हैं। 'अनित्य' उपन्यास की रचना मृदुला जी ने भारत की आजादी के लिए जो आन्दोलन चलाये जा रहे थे उनको दृष्टि में रखकर की है। लेखिका ने इस उपन्यास में गाँधीजी की अहिंसात्मक प्रवृत्ति तथा नेहरू जी के आदर्शों को भी दिखाया है। उपन्यास में लेखिका ने गाँधीजी की समझौतावादी नीति का विरोध किया है तथा हिंसा के पक्ष का स्वाधीनता आन्दोलन में समर्थन गया है।

"मुझे लगता है, 1947 की आजादी की लड़ाई की कहानी मैंने बचपन में सुनी-देखी और आत्मसात् की थी, इसलिए वह काफी ठोस पृष्ठभूमि के रूप में 'अनित्य' उपन्यास में उभरी है।"[6]

उपन्यास में कुछ पात्रों को पूँजीवादी व्यवस्था का समर्थक तथा कुछ पात्रों को उनका विरोधी बताया गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र अविजित है जो कि गाँधीवादी तथा पूँजीवादी महाजनी संस्कृति का समर्थक है किन्तु उसमें अपराधबोध भी है। इस अपराधबोध के माध्यम से लेखिका गाँधीवादी स्वार्थी नीतियों तथा उनके आदर्शों का विद्रोह करती प्रतीत होती है। अनित्य जो कि अविजित का भाई है तथा गाँधीवादी नीतियों के विरूद्ध है। वह समय-समय पर स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में अपनी भूमिका निर्वाह करता है। अन्य पात्र महाजनी संस्कृति के आदर्शों की ओर पूरी तरह समर्पित हैं और उनमें कोई अपराध बोध नहीं है। इस प्रकार राजनीतिक तथा स्वतन्त्रता संग्राम की परिस्थितियों को स्पष्ट करने वाला यह उपन्यास गाँधीवादी नीतियों को सिरे से नकारता है तथा पाठकों के मस्तिष्क को झकझोरने में लेखिका को सफल बनाता है।

मैं और मैं

मृदुला जी द्वारा लिखित इस उपन्यास की रचना सन् 1984 में की गई थी। इस उपन्यास में मृदुला गर्ग ने स्त्रीपुरूष सम्बन्धों की मार्मिक झाँकी प्रस्तुत न करते हुए उच्च तथा निम्न वर्ग के आपसी संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उपन्यास में लेखिका ने समाज के दो वर्गों के द्वन्द्व का यथार्थ चित्रण किया है। मृदुला जी के 'चितकोबरा' तथा 'अनित्य' उपन्यास की भाँति इसकी कथा के सूत्र अस्त-व्यस्त न होकर क्रमबद्ध तथा रोचकपूर्ण है जो पाठकों को प्रभावित करने में सफल रहा है। 'मैं और मैं' उपन्यास एक लेखिका के संघर्ष तथा शोषण की कथा है। एक 'मैं' के रूप में एक स्त्री अपने परिवार के उत्तरदायित्व का बखूबी निर्वाह करती है तथा दूसरे 'मैं' के रूप में एक लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाकर समाज के प्रति कर्त्तव्य का भी निर्वहन करती है। इस प्रकार वह दुहरा व्यक्तित्व निभाती है। उपन्यास में लेखिका ने दो लेखकों के बीच के अहम् की तुष्टि करते हुए वर्ग संघर्ष का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है कहानी में लेखिका माधवी अपने अहम् की संतुष्टि के लिए कौशल नामक एक लेखक जो कि निम्न वर्ग का है, के झूठ तथा चालाकी में फँस जाती है। वह लेखिका के लेखन की झूठी प्रशंसा करके उसे मानसिक संतुष्टि प्रदान करके पैसे ऐंठता रहता है। वह यह सोचकर माधवी का शोषण करता है कि जिस उच्च वर्ग ने निम्न वर्ग का शोषण किया है। उनका शोषण करना हमारा अधिकार है अर्थात् उसके अंदर कोई अपराध बोध नहीं है।

"सम्पन्नता और अभाव के बीच अचानक वर्ग चेतना खाई की तरह फैलती जाती है और आदमी वह कर बैठता है जो अपराध, अनैतिकता की सीमा में आता है।"[7]

अन्त में माधवी को कौशल के झूठ तथा फरैब का पता चल जाता है और अब स्थिति उल्टी हो जाती है। अब माधवी उसका मानसिक शोषण करती है। इस प्रकार यह उपन्यास दो वर्गों के बीच के द्वन्द्व को प्रस्तुत करता है।

कठगुलाब

यह उपन्यास मृदुला गर्ग द्वारा लिखा गया नवीनतम उपन्यास है। यह उपन्यास नारी एवं नारी की समस्याओं को लेकर लिखा गया है। इस उपन्यास में स्मिता, मारियान, नर्मदा, असीमा तथा नीरजा प्रमुख स्त्री पात्र है। यह एक तरह से भारतीय नारियों के संघर्ष और उनकी पीड़ा का जीता-जागता उदाहरण है। इस कृति में नारी पर हुए अन्याय तथा अत्याचार का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। उपन्यास में सभी स्त्री पात्रों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ भिन्न है। ये स्त्री पात्र उस व्यवस्था से निजात चाहती हैं जो नारी को शोषण तथा भोग की वस्तु समझती है। ये स्त्री पात्र हर परिस्थिति का डटकर सामना करती है तथा हार नहीं मानती है।

यह उपन्यास पुरूष प्रधान समाज में स्त्री के शोषण तथा स्त्री मुक्ति की कथा है। इसमें नारी को पुराने जमाने की अबला छवि से निकालकर अपनी अस्मिता तथा अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। लेखिका का मानना है कि कठगुलाब का प्रतीक रूप में अर्थ है- नारी की जिजीविषा। वे कहती हैं कि "स्त्रियाँ गुलाब नहीं है जो अपने आप खिल जाती है। वे कठगुलाब हैं जिन्हें थोड़ी सी देखभाल के साथ खिलाना पड़ता है।"[8] यदि उन्हें प्रेम, विश्वास तथा संवेदना को बौछारे नहीं मिलती है तो वे खिल नहीं पाती है। इसका प्रभाव स्त्री तथा पुरूष दोनों पर ही पड़ता है।

लेखिका का यह उपन्यास नारी समाज के लिए एक मिसाल का कार्य करता है कि किस प्रकार स्त्रियाँ अपने पर हुए अत्याचार के प्रति विद्रोह करके उसका डटकर सामना कर सकती है तथा विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्यों के द्वारा सराहनीय योगदान दे सकती है। उनके इस उपन्यास के नारी पात्र विभिन्न आंदोलनों से जुडे. रहकर कार्य करते दिखाई पड़ते हैं। कहीं लघु एवं कुटीर उद्योगों से जुड़कर तो कहीं गोधड़ परियोजना जैसे कार्यों से जुड़कर अपने आपको सिद्ध करते हुए दिखाई देते हैं। इस प्रकार मृदुला गर्ग का यह उपन्यास विवादास्पद होते हुए भी एक अनूठा उपन्यास है।

मिलजुल मन

सन् 2009 में प्रकाशित मृदुला जी का यह एक नवीनतम उपन्यास है। इस उपन्यास को 2013 में साहित्य अकादमी सम्मान से पुरस्कृत किया गया है। यह एक ऐसा उपन्यास है जो आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। उपन्यास की नायिकाएँ गुल तथ मोगरा कहानीकार के करीबी रिश्तों में शामिल है। गुलमोहर मृदुला गर्ग की बहन मंजुल भगत के किरदार में है तथा मोगरा स्वयं लेखिका मृदुला गर्ग है।

मृदुला जी ने यह उपन्यास किस्सागोई शैली में लिखा है। यह उपन्यास गुल तथा मोगरा के जरिये आजादी के बाद भारत की नारियों के जीवन में परिवर्तन और ठहराव की कथा प्रस्तुत करता है। उपन्यास की नायिका मोगरा ने अपने पिता बैजनाथ जैन की जीवन शैली के माध्यम से पचास के दशक के मध्य के जीवन और

सामाजिक परिवर्तन और स्वतंत्र भारत में उसके रूप की बड़ी सूक्ष्मता से जाँच की है।

मृदुला गर्ग ने एक बहुत ही नाजुक और करीबी रिश्ते तथा एक ओजस्वी कहानीकार के मध्य जिस ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ इस उपन्यास की कथावस्तु को लिखा है। वह उनके साहस का परिचायक है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लेखिका द्वारा लिखित सभी उपन्यास किसी न किसी रूप में समाज के यथार्थ रूप को प्रकट करते हैं। साथ ही उन्होंने नारी शिक्षा, दाम्पत्य सम्बन्ध, नारी शोषण, उच्च निम्न वर्ग वैषम्य आदि मुद्दों को भी इन उपन्यासों का विषय बनाया है साथ ही इन समस्याओं के निराकरण को भी प्रस्तुत किया है। विवादास्पद होते हुए भी उनके उपन्यास सराहनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मंत्री, उषा, 'हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक सम्बन्ध', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, पृष्ठ 2

2. मंत्री, उषा, 'हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक सम्बन्ध', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, पृष्ठ 2

3. गर्ग, मृदुला 'उसके हिस्से की धूप, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ 136

4. द्विवेदी, दिनेश, पुनश्च, सृजनात्मक विधाओं की अनियतकालीन पत्रिका-मृदुला गर्ग पर एकाग्र, पृष्ठ 27

5. गर्ग, मृदुला 'चितकोबरा', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, पृष्ठ 8

6. गर्ग, मृदुला 'चुकते नहीं सवाल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 155

7. अग्रवाल, डॉ. तारा, मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, डॉ. तारा अग्रवाल, पृष्ठ 205

8. द्विवेदी, दिनेश, पुनश्च मृदुला गर्ग पर एकाग्र, पृष्ठ 46